।। गृह संतोष को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ गृह संतोष को अंग लिखंते ||

|| कवत ||

सुण ब्रम्हा घर नार || नार सिवजी संग होई ||
म्हा बिस्न घर नार || नार गणपत घर दोई ||
चांद सुर्ज घर नार || नार ब्यास संग जाणो ||
राम किस्न औतार || ताय संग ब्होत बखाणो ||
सुर तेतिसूं देवता || सब घर नारी जोय ||
अे तामे सुखराम के || कोहो कुण निरसा होय ||१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज त्यागी से बोले,अरे त्यागी,तु ग्रहस्थी जीवन को हलका समजकर पत्नी को त्याग दिया है । अरे त्यागी,ब्रम्हाके घर सावित्री,शंकर के घर पार्वती यह नारीयाँ है । महाविष्णु के घर लक्ष्मी यह उसकी पत्नी है । गणपती के घर रिध्दी सिध्दी दो पत्नीयाँ है । चंद्रमा के घर अश्विनी पकडकर सत्ताईस दक्ष राजा की पुत्रीयाँ है । सुर्य के घर संज्ञा स्त्रि है । व्यास के घर वटीका और वृता अप्सरा यह नारीयाँ है । रामचंद्र के संग सिता नारी थी । कृष्ण के संग बहुत नारीयाँ थी । सभी देवता ३३०००००० है । सब के घर नारीयाँ है। इन सभी मे तुझे तेरे से कौन कमजोर,हलका दिख रहा है ?|||१||

बाष्ट मुनि घर नार || पुत्र साठ ऊण जाया ||
पांडू पाँचू जाण || नार प्रणी घर लाया ||
कर्दम मुनि घर नार || नार पीरां संग होई ||
रूषभ देव स्हेदेव || नार बिन रहया न कोई ||
अे घरबारी सब हुवा || हर भज ऊतऱ्या पार ||
अेता सूं सुखराम के || कुण इधको संसार ||२||

अरे त्यागी,वसिष्ठ मुनीके घर अरुणधंती व उर्जा ऐसी दो पत्नीयाँ थी । उनसे वसिष्ठको साठ पुत्र जन्मे । पांचो पांड्वो ने द्रोपदी से विवाह कर घर लाया । कर्दम मुनी के घर देवहूती नारी है । पिरो के संग नारीयाँ थी । ऋषभदेव के घर जयंती,सहदेव के घर कविजया थी । ये सभी स्त्रि के बिना नही रहे । ये सभी गृहस्थी थे । वे सभी ब्रम्ह मे जाकर मिल गए । राम नाम का भजन कर पार उतर गए । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज त्यागी को पुछ रहे की,तुमने पत्नी त्यागी व ग्रहस्थी जीवन को हलका समजा तो क्या तुम इनसे कुछ अधिक हो ? ||२||

जनक बदे घर नार || सेंस दस खवासाँ जाणो ||
फिर राजा अमरिष || ताँय संग ब्होत बखाणो ||
जमदग्न घर नार || नार संक्र रिष धारी ||

देव निरंजण आप ।। ताय ले सुन्न बिचारी ।।
अे घर बारी सब हूवा ।। मिल्या ब्रम्ह मे जाय ।।
क्या ओगण सुखराम के ।। सुण त्यागी घर माय ।।३।।

कुंडल्यो ।।

अरे त्यागी,राजा जनक विदेही के घर सुनयना पत्नी थी व दस हजार रखेल थी । अमरिष राजा के घर बहोत सी औरते थी । जमदग्नी ऋषी के घर रेणुका औरत थी । शंकराचार्य के घर नारी थी । स्वंयम निरंजन देव के घर ब्रम्हशुन्य यह पत्नी है । तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ये सभी ग्रहस्थी थे व ब्रम्ह मे जाकर मिल गए । तो ग्रहस्थी पण मे क्या औगुण है की तुमने घर और घरके औरत का त्याग कर दिया ?।।३।।

ब्रम्ह सदाई अमर रे ।। जाका क्हाँ बखाण ।।
माया अमर धाम हे ।। सो नर ईधकी जाण ।।
सो नर ईधकी जाण ।। ब्रम्ह तो डिगेन कोई ।।
जो माया तज जाय ।। अरथ बिन निकमो होई ।।
सुखराम हद बेहद लग ।। जनम मरण गत जाण ।।
ब्रम्ह सदाई अमर रे ।। ज्हाँ क्हां बखाण ।।४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने त्यागी से कहा सतस्वरुप ब्रम्ह यह सदा अमर है । उसका वर्णन करते नही आता । इस सतस्वरुप ब्रम्ह मे अमर माया,बिनसुख वाला पारब्रम्ह व महाप्रलय मे नष्ट होनेवाली माया है । सतस्वरुप ब्रम्ह के इन सभी धामो मे अमर माया का धाम सबसे ऊँचा व सदा सुख देनेवाला है । हे त्यागी,इस अमर माया को सबसे अधिक पकड उसे प्राप्त कर । सतस्वरुप ब्रम्ह तो कभी कम होता ही नही । वह सदा सरीखा रहता । जैसे सतस्वरुप ब्रम्ह कम जादा होता नही ऐसे ही सतस्वरुप माया कम जादा होती नही । सदा एक सरीखी रहती । कम जादा तो त्रिगुणी माया की सुख सृष्टी होती । इसलिए त्रिगुणी माया के सृष्टीको त्याग व सतस्वरुप के सतमाया के सृष्टीको प्राप्त कर । ब्रम्हज्ञान मे पारब्रम्ह प्राप्त करनेके लिए माया त्यागनी पडती । ऐसे ब्रम्हज्ञानी हंस सतस्वरुप के पारब्रम्ह मे जहाँ सुख नही है ऐसे पद पहुँचते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज के ज्ञान मे कोई माया त्यागनी नही पडती व संत जहाँ सदा सुख है वहाँ पहुँचता इसलिए त्यागी को आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले पारब्रम्ह का बिज धारण किया व तुझे यहाँ माया त्यागनी पडी तो तू बिज का फरक समज । दोनो भक्तिके संत बीज सतस्वरुप ब्रम्ह मे ही पहुँचाते है परंतु माया त्यागनेवाला बीज जहाँ सुख नही है ऐसे सतस्वरुप के पारब्रम्ह पद मे पहुँचाता व मेरा माया सुख लेनेवाला बीज सतस्वरुप ब्रम्हके अमर माया पद मे पहुँचाता । इसलिए जो माया के सुख त्यागकर पारब्रम्ह का बीज

धारण करता वह सुख के लिए यहाँ पे भी बेकाम हो जाता व सतस्वरुप के पारब्रम्ह पदमे पहुँचनेके बाद भी बेकाम हो जाता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले हद याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के पद तक जावो या बेहद याने सतस्वरुप माया के अमर माया के पद तक जावो,सुख लेने से ही गती होती मतलब जन्म लेने से मरे तक माया से गती होती याने मायासे सुखका पद मिलता । माया त्यागने से नही होती ।।।४।।

|| इति अथ गृह संतोष को अंग संपूरण ||